हे माय गाँग

हे माय गाँग

डॉ. आभा पूर्वे

अंगिका संसद
सराय, भागलपुर

ISBN : ९७८.८१.९८७१०३.५.२

प्रथम संस्करण
ई. २०२५

सर्वाधिकार ©
कवयित्रीधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

चित्र
सोशल मीडिया एवं magichour.ai से साभार

रेखांकन
नागेश

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
१२५.०० (एक सौ पच्चीस रुपये)

He Maay Gaang
By Dr. Abha Purvey Rs. 125/-

माय

जीवनलता पूर्वे

लेली

जे अभियो हमरों स्मृति में होने बसली होली छै

जना भारत भूमि पर गाँग माय!

—आभा

दू शब्द

'हे माय गाँग' के मूल रूप आबें प्रकाशित होय रहलों छै। एकरों हिन्दी रूप 'नमामि गंगे' पहले छपी गेलै। बात ई छेलै कि तखनी परम आदरणीय जसवंत सिंह विरदी हिन्दुस्तान के नदी पर कोय किताब लिखी रहलों छेलै आरो हमरा कहलें छेलै कि गंगा पर हिन्दी में कविता भेजै लें।

हम्में तखनी यहा करलियै कि एकरों हिन्दी रूप प्रकाशित करवाय देलियै। पता नै हुनकों ऊ किताब निकललै की नै।

जे हुएँ आबें 'हे माय गाँग' के मूल रूप आपना सिनी के सामना में छै। नै कुछ जोड़लें छियै, नै हटैले छियै!

—आभा पूर्वे

सम्पर्क : शरतचंद पथ,
मशाकचक, भागलपुर-१ (बिहार)
मो.-०९३३४२०७९९८

क्रम—ः

- **उद्‌भव कथा/९**
- **विपथगामिनी गाँग/२१**
- **यात्रा कथा/३१**
- **प्राणधारा गांग/४५**
- **मिलन कथा/८१**

उद्भव कथा

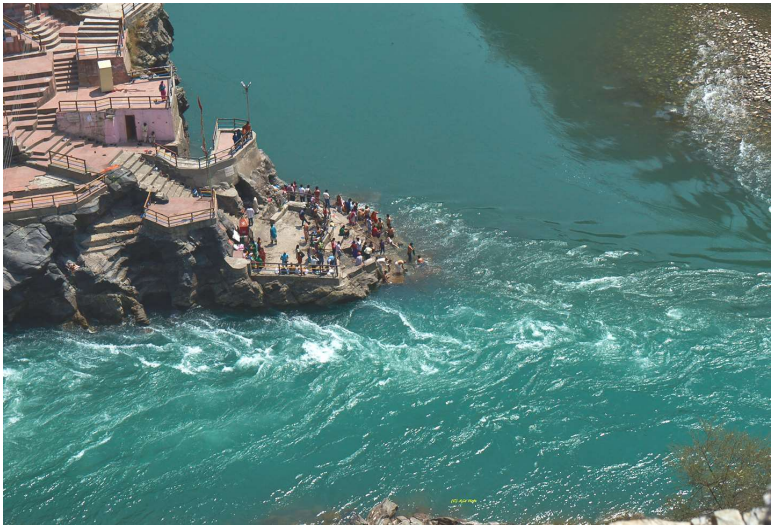

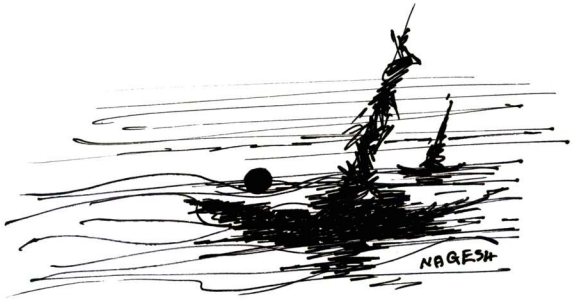

हे माय गाँग
धरती पर उतरै सें पहलें
कहाँ रहै छेलौ तोहें?
कोनी लोकों में?

केन्हों होतै ऊ लोक
कत्तें लोकों के ऊ लोक
तभिये तें समैलों होतै
तोरों एत्तें-एत्तें जलराशि!

विश्वासे कहाँ होय छै कि
तोरों वास
भगवान विष्णु रों बायां अँगुठा में होय छेल्हौं
आरो वहीं सें निकली गेलों छेल्हौ
हरहरैली
बदहवासनी-रँ
जे देखी कें
थरथरी लगी गेलों छेलै
तीनो लोकों के देवतासिनी कें
प्रार्थना में जुड़ी गेलों छेलै हुनकों हाथ कि
पहाड़े नै टूटी पड़ै

धरतीये नै धँसी जाय–
जुड़ी गेलों छेलै देवता सिनी के हाथ
पितामह ब्रह्मा जी रों आगू।

हौ किसिम के कँपकँपी देखी कें
भौआय गेलों छेलै परमपिता ब्रह्मा
समेटी लेलें छेलै अपनों कमंडलु में तोरा,
हे माय गांग!

नै, है केना हुएँ सकै छेलै कि
तोरों ई जलराशि
कोय कमंडलु में समाय गेलों होतै
आरो यहू केना हुएँ पारें
कि
तोरों हरहरैतें वेग
शिव जी के जटाए में बँधी रहें।

मन केन्हौं कें नै मानै छै
मतर पुराण तें कहै छै
आरो सौंसे लोकमानसो
मानै छै

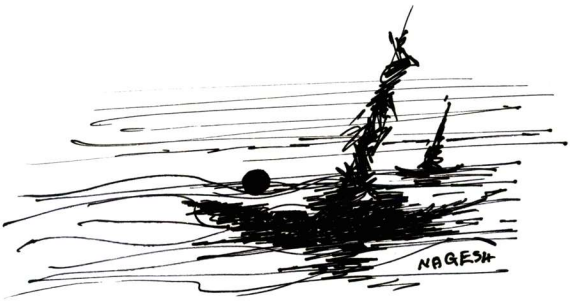

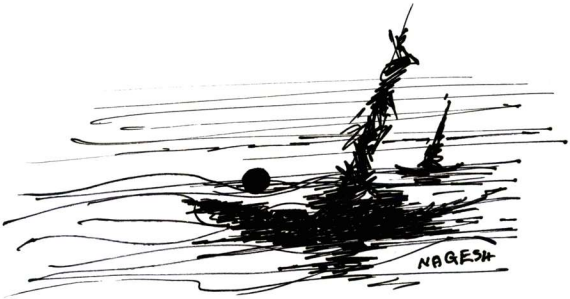

तें हम्मी कैन्हें कहौं
कि तोहें
धरती पर आवै सें पहलें
भगवान विष्णु के
गोड़वाला बायां अँगुठा में वास नै करै छेलौ,
बुह्मां तोरा
अपनों कमंडलु में
नै रखी लेलें छेलै
आरो फेनु यहू कैन्हें कहौं कि
तोरों सनसनैलों वेग
शिवजी के जटा में
बँधी कें नै रही गेलों छेलै!

मतरकि हम्में
शायत ई बुझौव्वल सें
बच्है लेली
अपनों मनों कें समझाय लै छी
गोमुख रों शिलाखंडे
भगवान विष्णु रों बायां अँगुठा छेकै
गोमुखे
ब्रह्मा रों कमंडलु छेकै

आरो हिमालय रों
ऊँच्चो-ऊँच्चों बिखरलों फैललों चोटी
शिव के जटा सें
कम्मो कहाँ बुझावै छै।

हमरों ई बात जों सच्चो हुवें
तें हे माय
मनें ई मानवे नै करै कि तोहें
विष्णु रों बायां अँगूठा में
वास नै करै छेल्हौ
आरो वहाँ सें सीधे
ब्रह्मा रों कमंडलु में;
फेनु देवाधिदेव
शिव रों जटा पर नै उतरलौ!

हेने ही होलों होतै, माय
हे पतितपावनी
मोक्षदायिनी
त्रिभुवन विहारनी
त्रिपथगामिनी
महानदी हे गाँग माय!

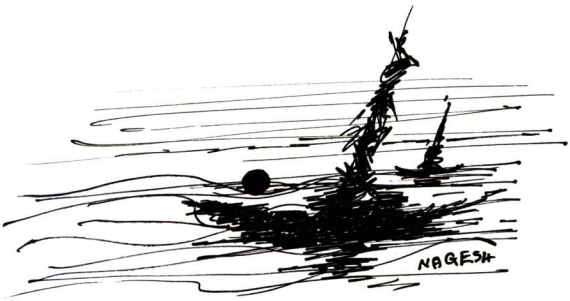

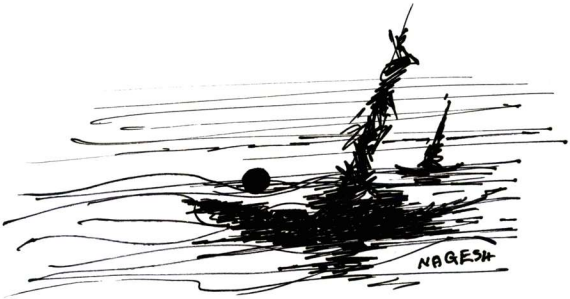

सूर्य रों किरण सें दीप्त
पर्वत रों चोटी सें
तरल चंद्रमणि नाँखी उतरतें,
हे गंगा माय
जों तोहें नै ऐतियौ धरती पर
तबें की होतियै सगर रों
साठ हजार पूत सिनी के
जे तोरों जोंल छुवेला भर सें
जित्तों होय गेलों छेलै।

साठ हजार हौ पुत्र सिनी
आरो सगर के हौ विजय यज्ञ
देवता सिनी पर विजय पावै रों यज्ञ
यही सें तें
यज्ञ में भाँगटों डालै लेली
चुराय लेलें छेलै इन्द्रें
यज्ञ रों घोड़ा
आरो बान्ही देलें छेलै ओकरा
पाताल लोकों में जाय कें
एकटा तपस्यारत रिखि रों कुटिया के बाहर।

सगर के पूतसिनी नें
खोजवों शुरू करलकै
तें पहुंचलै पाताल लोक
यज्ञ रों घोड़ा देखलकै
रिखि आश्रम रों बाहर बँधलों
सोचलकै, ई सब
यहा रिखि के खेल छेकै
की-की नै कही देलकै
सगर रों सब पूतों नें—
अपमानित होतें रिखि रों गुस्सा
कहाँ रुकें पारलै केना रुकतियै
हाथों में जोंल लेलकै
आरो सगर के साठो हजार पूतों कें
शाप दइये तें देलकै।

लहकी उठलै सब्भे पूत सिनी
भष्म रों ढेर बनी गेलै पूत सिनी
पृथ्वी लोक पर खलबली मची उठलै
हाहाकार रों प्रलय
सगर रों भस्मीभूत पूत
प्रेत बनी कें भटकें लगलै।

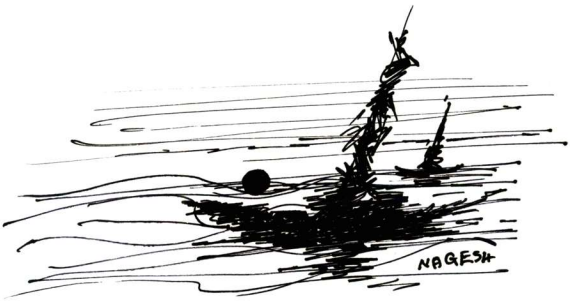

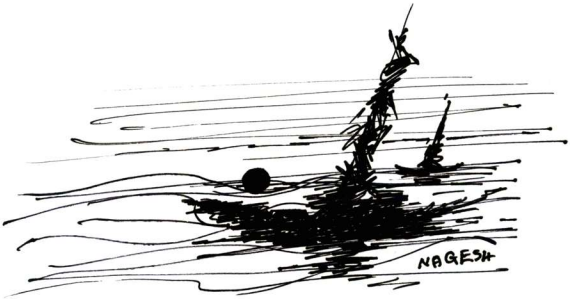

आखिर सगर के ही पूत अंशुमाल नें
ऊ सिनी के मुक्ति लेली
कोशिश करलकै
मतुर सब निष्फले गेलै।

तबें दिलीप रों संकल्प जगलै
मतुर वहू संकल्प गेलै व्यर्थ
अभागलों!

बढ़ले जाय छेलै
हाहाकार रों प्रलय कुछ आरो
आखिर उठी ठाढ़ो भेलै भगीरथ
(दिलीप रों दोसरी प्रिया के पूत)
उठाय कें हाथ अपनों
संकल्प में एतन्है कहलकै—
हम्में अपनों पूर्वज के मुक्ति लें
धरती पर उतारवै
मुक्तिदायिनी गंगा कें।

भटकी रहलों आत्मा सिनी कें
पतितपावनी गाँग

मुक्ति देतै
आरो फेनु
उतरी ऐलै गाँग
शिव रों जटा सें होतें हुएँ
नीचें भरतभूमि पर।
हे माय गांग
तोरों जन्म के
कत्तें-कत्तें कथा प्रचलित छौं
तोरों जत्तें धारा
ओत्तें तोरों जन्मोकथा।

कहै के तें
यहू कहलों जाय छै कि
हजारो-हजार वर्ष पहलें
जबें हिमालय
अपनों उथल-पुथल के दौर में छेलै
तबें वहाँ एक ठो नदी छेलै
जेकरों नाम छेलै इन्द्रब्रह्म!

चट्टान ऊपर होलै
तें इन्द्रब्रह्म के धाराओ बँधी गेलै

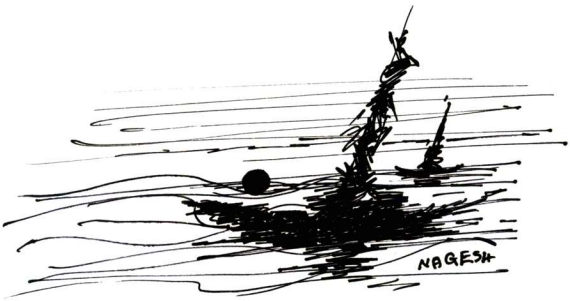

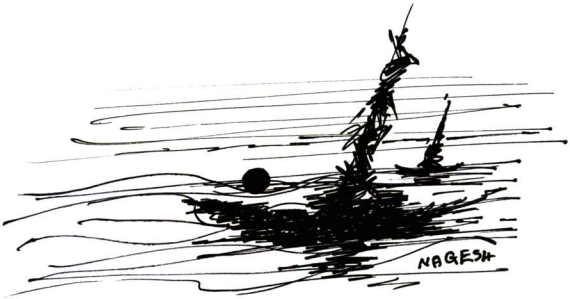

नदी झील बनी गेलै
मतर नदी कें रोके पारलें छै कौने
नदी के अर्थ होय छै—प्रवाह
झील बनलों इन्द्रब्रह्म नें
फेनु किनारा तोड़लकै
आरो वही
तीन धारा में फूटी पड़लै
जे धारा पच्छिम में बहलै
ऊ होलै सिंधु
जे धारा पूरब दिस बहलै
ऊ कहैलै ब्रह्मपुत्र
आरो जे धारा
दक्षिण दिस बहलै
वही होलै गाँग।
गाँग, जे विंध्य पर्वतमाला सें
रोकला पर
पूर्व गामिनी बनी गेलै
आरो अपनों धारा कें समेटतें
बंगाल रों जमीन कें
आंदोलित करतें
सागर में

तब्है सें समाय रहलों छै
युग-युग सें ही
बहलों आवी रहलों छै गाँग!

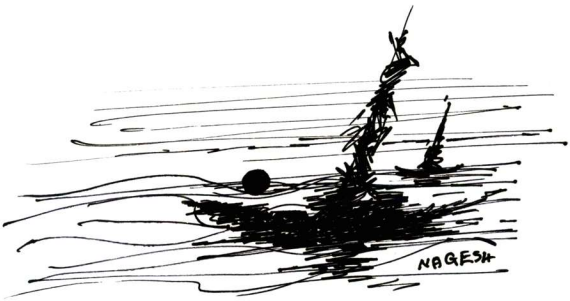

विपथगामिनी गाँग

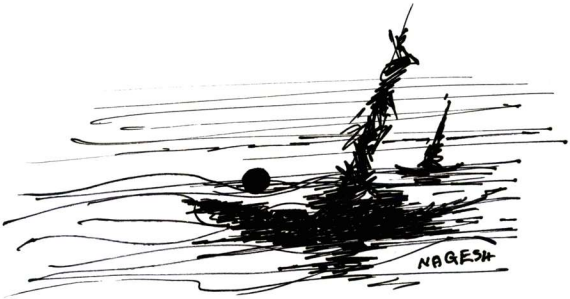

हे माय गाँग
लोगें तोरा त्रिपथगामिनी कहै छौं
यही इन्द्रब्रह्म रों तीन धारा के कारणें
आकि कोय आरो कारणें।
हमरों रिखि-मुनि तें यहा कहै छै कि
तोरों एक धार स्वर्गों दिस गेलों छै
दोसरों धरती कें स्वर्ग बनावै छै
आरो तेसरों पाताल लोकों में प्रवेश करी
वहाँकरों प्राणी कें मुक्ति दै छै
अधोगाँग बनी कें।

माय,
तोरों जन्मकथाहे
लोक कें कल्याण करैवाली छेकै
जगत कें मुक्ति दैवाली छेकै।

हे माय गाँग
तोहें तें जगतजननी छेकी
जगततारणियो
फेनु हेनों कैन्हें हुएँ छै कि
तोरों छलछल-कलकल करतें लहर सिनी

हठासिये
प्रलय कें नेतों दियें लागै छै
आरो फेनु चारो दिस
नाश रों तांडव
शुरू होय जाय छै?

पहाड़ रेत बनतें नजर आवै छै
गाछ, जना झरतें पत्ता नाँखी गिरै छै
धारा सें ढहते मकान
जना कुआँ में गिरतें पत्ता सिनी
आरो उफनैलों धारा
आसन बनाय लै छै
सेतु सिनी कें
राजपथ कें
पगडंडी कें।

सब्भे कुछ समावें लगै छै
तोरों कोखी में
आरो जबें
उतरै छौं क्रोध
हुवै छौं मन शांत

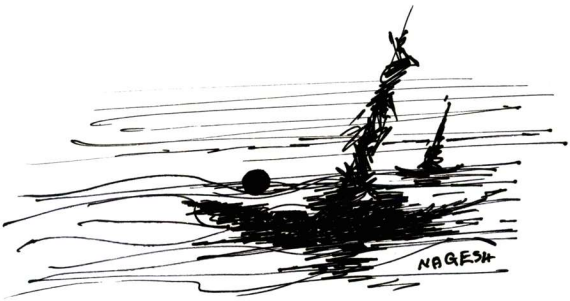

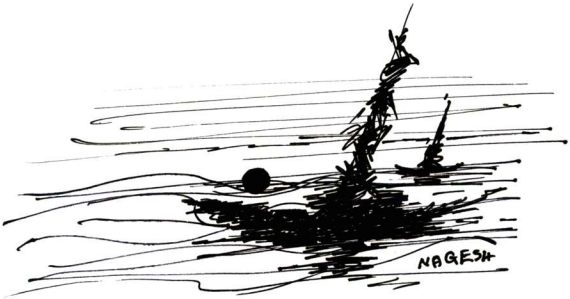

तबें कहाँ कुछुवो होय छै,
हुवै छैं तें बस
पहाड़ों के माथा पर
धरती के छाती पर
ओकरों बाँही पर
गोड़ों पर
खाली आदमी के लाशे-लाश—
कंकाल रों साम्राज्य।

माय! तोरों ई उन्माद
कालो कें भयभीत करैवाला छेकै
डरो कें डोंर दैवाला।

तोरों ई उन्माद सें
काँपतें रहै छै धरती
देवता रों गिरै छै घोंर
आरो एतन्है नै
बही जाय छै तोरा में
देवताहौ निरुपाय
भाँगटों के उड़तें रहै छै बाज-गिद्ध
यैठां-वैठां, सब्भे जग्घों पर।

एकठो दिल दहलायवाला कानवों
एक भयानक चीख
फेनु वहा घनघोर सन्नाटा
आरो सब्भे के बीच
हे माय, तोरों वेग काँपतें रहै छै
गुस्सा सें
आकि करुणा में
कौनें कहें पारें!

जना, समाधिस्थ योगी रों साँस
आग के लपट में
बदली जाय
जेना, चंदन रों शीतलता में
लपट के लहर समाय जाय
जेना, इंजोरिया रात
बैशाख-जेठ के लू बरसावें लगें
जेना, अमृत सें
हलाहल के ज्वार उठें लगें
हेने ही होय जाय छौं तोरों रूप
जबें तोहें उग्र हुवै छौ

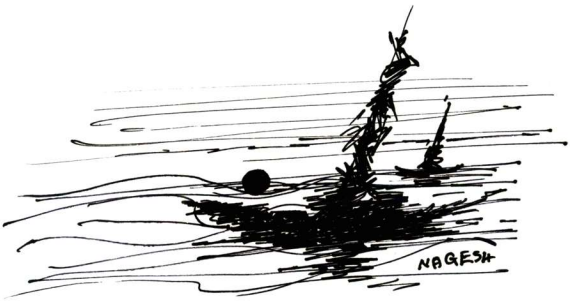

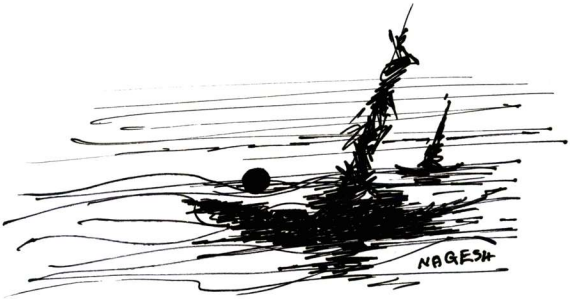

उन्मादिनी होय छौ।
हे माय,
काल रों कंधा पर सवार होलें
हाँफतें-हँफैलें भागली जाय छों
एकटा हरियैलों-भरियैलों दुनियाँ कें
मुर्दघट्टी में बदली जाय छै
हजारो-हजार सालो वास्तें
छोड़ी जाय छौ
अपनों पीछू
काँपतें हवा
कानतें दिशा
कलपतें पहाड़
बिलखतें जंगल
आरो पछाड़ खैतें नद्दी।

माय गाँग
जबें तोंय होय छों उन्मादिनी विपथगामिनी
तबें लोक संस्कृति के नाश होय छै
नीति के गर्दन दबैलों जाय छै
प्रकृति के मर्यादा टूटै छै।

आय सें हजारो हजार साल
जबें तोहें बड्डी शांत छेलौ
कहै छै
अजोधा के राजा जितशत्रु के
पुत्र छेलै सगर
जिनकों ही पूत छेलै जह्नु कुमार
वही जह्नु
अपनों सगा संबंधी रों साथ
कैलाश पर घूमै लें गेलों छेलै
फेनु कैलाश के सुरक्षा लेली
ओकरों चारो दिस
खाई खोदी देलकै
आरो उतारी देलकै वैमें गाँग कें
धरती कें फोड़ी
अपने दंड रतन सें।
फेनु की छेलै
तोरों जोंल
धरती रों नीचें
नागलोक तांय पहुँची गेलै
नागों के दिल दहल्लै
आरो होने ही नागराज रों गुस्साहौ
रोकलकै सगर के पूतसिनी कें

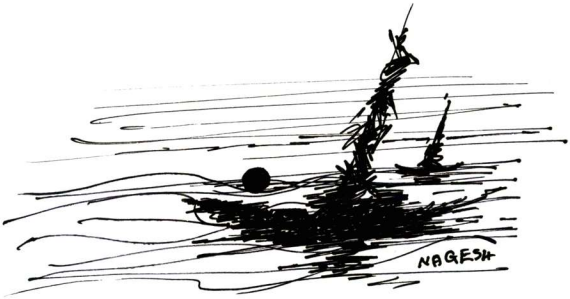

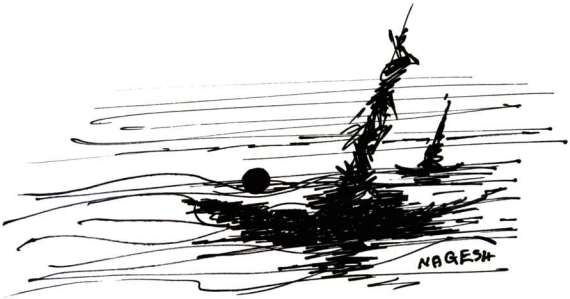

मतर कभियो कि रुकैवाला छेलै
अभिमानी सगरपुत्र!

फेनु की छेलै
नागराज ठाढ़ोॅ भेलै
शाप दै वास्तेॅ,
तबेॅ की
देखथैं-देखथैं
सगरपूत सिनी भष्म होय गेलै
शाप दैके पहले ही।
जानलकै सब्भे बात जबेॅ
राजा सगर नेॅ
कलपित्तो मनोॅ सेॅ भेजलकै पोता भगीरथ केॅ
आदेश देलकै
जेना केॅ हुएँ
गाँग केॅ सागर तांय आनी
गाँग के धारा शांत करोॅ।
भागीरथ नेॅ तोरोॅ लहर केॅ
शांत करलकै।
तब्हैं सेॅ हे माय गांग
भागीरथी कहावै छोॅ

आरो तोहें जाह्नवीयो छेकी
कैन्हेंकि जह्नुएं तोरा धरती पर
उतारलें छेलौं, दोबारा।

हे माय गाँग
कत्तें-कत्तें कथा छौं तोरों
धरती पर उतरी आवै के
मतरकि यहू सच छेकै कि
तोरा जबें-जबें भी
सगर के पूत सिनी नें
छेड़लें छै, फोड़लें छै
तोहें विकट रूप धरलें छौ
आरो बहें लगलों छौ उन्मादिनी बनी—
धरती डुबलों छै
तोरों आनलों जलप्रलय में
हे माय गाँग!

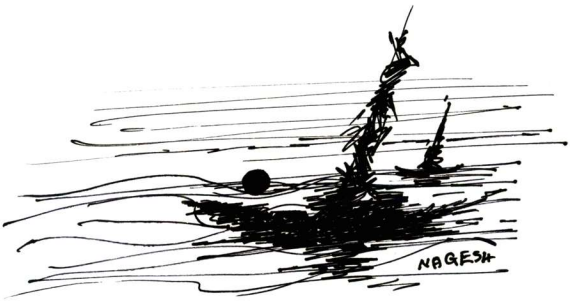

यात्रा कथा

मुन्शी घाट
MUNSHI GHAT

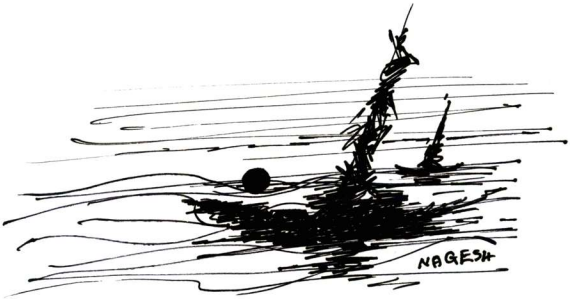

हे माय गाँग
की तोहें खाली महानद्दीये भर छेकी
आकि सच्चे में माय्ये छेकी?
हम्में तें एतन्हैं जानै छी कि
तोहें हिमालय रों बड़की बेटी छेकी
भीष्म पितामह रों माय छेकी
भगवान शिव रों भार्या छेकी।

हों, माय गाँग
खाली नद्दिये नै छेकै
माय छेकै
महादेवी छेकै
कहीं तें दू भुजा में
कहीं तें चार भुजा में सुशोभित्त।

माय
भारत कें निर्मल
पुनीत बनाय खातिरे तें
तोहें नदी के रूप
धरी लेलें छौ
हों, नद्दिये रूपों में निकलै छों

उत्तराखंड रों गोमुख सें
साढ़े बारह हजार सें
बेसीये ऊँच्चों
पर्वतभूमि सें
आरो फेनु लगातारे
बहथैं रहै छौ
ढाई हजार किलोमीटरो
सें बेसी
यात्रा तय करै छौ
आपनों साथ
कै-कै नद्दी सिनी कें
साथ लेनें
आरो तब तांय ही
बहतें ही रहै छौ
जब तांय कि
तोरों वेगवान धारा
बंगाल रों समुद्र के साथ
एक नै होय जाय।

माय गाँग
केकरा नै आचरज होतै

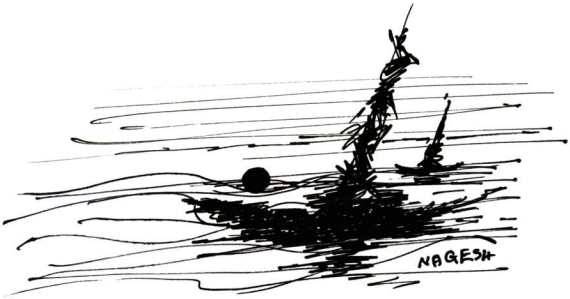

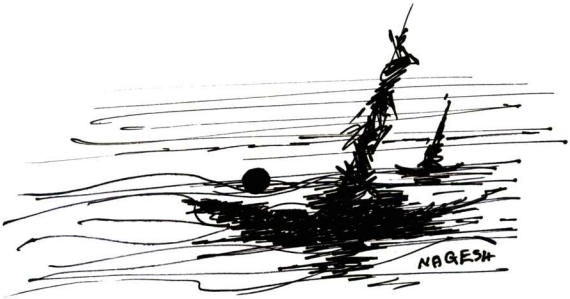

ई जानी कें कि
जैठां सें तोहें निकलै छौ
वै ठां तोरों गहराई
बस पन्द्रह इंच सें बेसी कहाँ छौं!
आरो एत्तें पतला कि
मुश्किल सें दू गज के लगै छौ
ऊ तें तोरों काया
तभैं कुछ चौड़ा हुऐ छौं
जबें कनखल में
तोरों दू धारा
मंदाकिनी आरो अलकनंदा
पहाड़ों सें नीचें उतरै छै
तभिये तोहें भागीरथी कहावै छौ
तबें तोरों रूप
कत्तें निर्मल होय छौं
कत्तें स्वच्छ
फेनैलों दूधों कें
लजाय दैवाला।

हे माय गाँग
की छौं तोरों जोंल में

कि पापो तांय
पुण्य में बदली जाय छै
पंडित सिनी बोलै छै
तोरों जल में
बैव वैक्टरियो फेज नाम के
कोय विषाणु होय छै
जे दूसरो आरो खतरनाक विषाणु कें
निगली जाय छै।

हमरा तें नै मालूम
हमरा तें खाली
एतन्है मालूम छै कि
तोरों जोंल
जोंल नै
धरती पर बहलों
अमृत रों धार छेकै
जे हमेशे बहत्हैं रहै छै
हरिद्वार सें लैकें
गंगासागर तांय।
माय
तोहें हेनों-तेन्हों नदी नै
देवनदी छेकौ

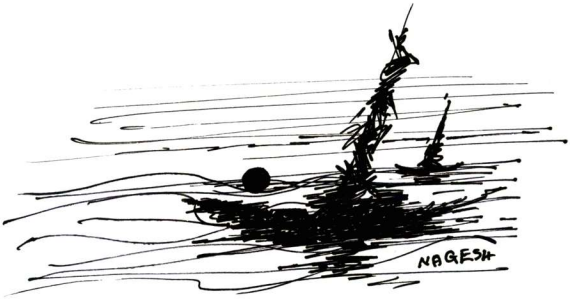

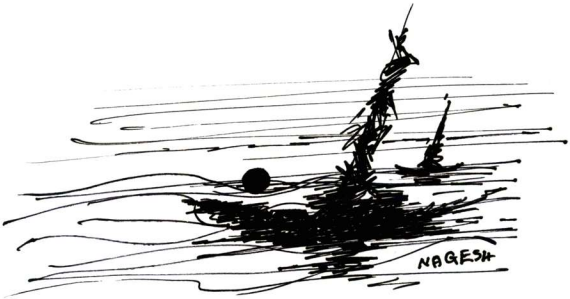

यहीं सें तें
तोहें जन्नें-जन्नें सें गुजरलों छों
हुन्नै-हुन्नै देवता सिनी रों घोंर
देवता सिनी रों नगर
ठाढ़ों होय गेलों छै।

माय गाँग
तोहें देखलें छौ
अपनों किनारी-किनारी पर
बसतें ढेरे-ढेर सभ्यता कें
ढेरे-ढेर साम्राज्य कें
ऊ सब बनथैं भर नै देखलें छौ
ऊ सब कें उजड़थौं देखलें छौ
तोहें धर्म रों उठानो देखलें छौ
धर्म में ऐतें पाखंडो कें
आरो ऊ पाखंड रों विरोध में
गोस्सा रों उठतें बोलियो कें।

कभियो तोरे किनारी
स्वामी दयानंद नें
धर्म रों पाखंड रों विरोध में

आपनों धजा लहरैलें छेलै
तोरों लहर में
है विरोध रों गूँज
अभियो होनै कें गूँजी रहलों छै।

माय गाँग
तोरों निर्मल लहर
खाली लहरे भर नै
ई इतिहासो छेकै
भारतीय सभ्यता आरो संस्कृति रों।

कोइयो ई लहरों में
सुनें सकै छै
हस्तिनापुर रों कथा
जे तोरे तटों पर
कभियो बसलों होलों छेलै।

कौरव-पांडवो के
कत्तें-कत्तें कथा
तोरों लहरों सें
अइयो सुनलों जावें पारें,

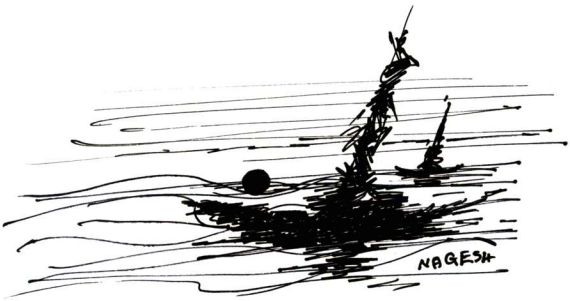

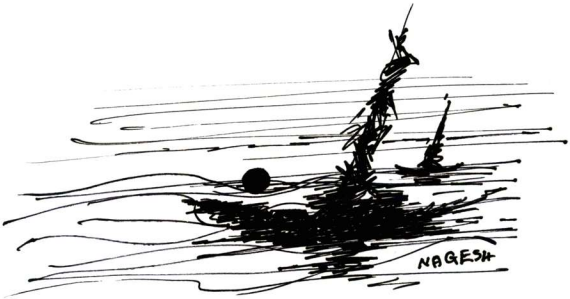

तोरा में जमुना रों मिलवों
दू हेरैलों बहिन के मिलवों लगै छै।

कत्तें-कत्तें राजवंश रों कथा
तोरों धाराहै के साथें
बहतें रहै छै
वैमें मौखरी राजाऔ सिनी के
कहानियो छै।
गुप्तेवंश के नै
नंदवंश
मौर्यवंश
आरो पालो वंश के
उत्थान-पतनों के
तोरों तटें
तोरों लहरें देखनें छै।

हे माय गाँग
जैठां तोरा सें जमुना मिलै छै
ऊ सचमुच में कत्तें पवित्र स्थल छेकै
तभिये तें ऊ प्रयाग छेकै
जहाँ भगवान रामें

कभियो भारद्वाज रिखि सें उपदेश सुनलें रहै
आरो जहाँ कभियो
सम्राट हर्षवर्द्धन
हर पाँच साल बाद
अपनों संपत्ति रों दान
प्रजा के बीच
खुल्ला हाथों सें करलों करै
तबें यज्ञ सें उठतें पवित्र धुआँ
सौंसे भारत के
सुगंधित करतें रहै
हजारो हाथी-घोड़ा के गरज साथें
भक्त सिनी रों जयजयकार!
ई सब के कथा
खाली इतिहासे में
नै लिखलों होलों छै।
हवाओ पर/माँटियो पर
लहरो पर/आकाशो पर
लिखलों होलों छै।

माय गाँग
हिमालय सें उतरला के बाद

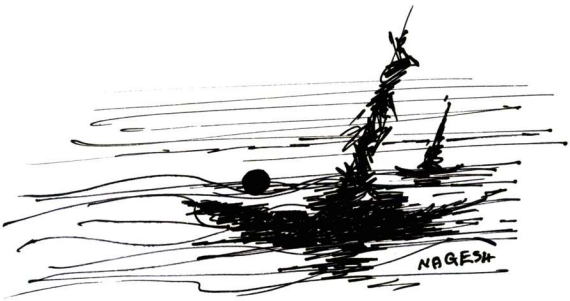

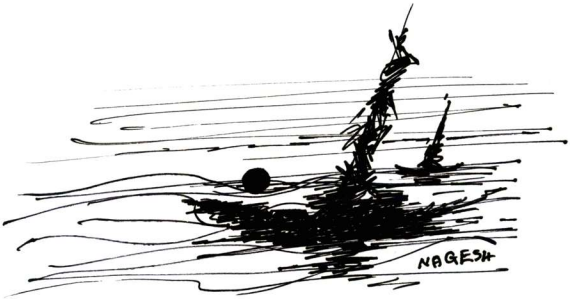

जबे तोहें काशी पहुँचौ छों
आरो अर्द्ध चंद्रमा रों रूप
धारण करै छों
तबें तोरों रूप रों सुन्दरता के
वर्णन महाकवियो सें संभव नै।

काशी कें तोहें
कत्तें पवित्र बनाय देलें छौ
कत्तें-कत्तें महान यज्ञ के
यहाँ होतें हुए
तोरो लहरें देखलें छौं
एकरे प्रमाण देतें
यहाँ दशाश्वमेध घाटो छै—
तोरों महिमा कें
खाली दशाश्वमेघ घाटे नै कहै छै
हरिश्चंद घाट
भाड़वाला घाट
जलशायी घाट
मणिकर्णिका घाटो
अपनों-अपनों हृदय में
इतिहास रों मुनलों पन्ना समेटलें होलों छै,

जिनका जानकारी छै
हुनी पढ़ै छै
आरो भारतवासी होय के गौरव
अनुभव करै छै
जहाँ स्वर्ग रों नदी गाँग बनी कें उतरलों छों।
गाँग, जे कुंभ मेलाहौ कें पवित्र करै छै
गांग, जेकरों बिना कुंभ मेला
बिना आत्मा के देहे-रँ तें।

आरो यहीं गाँग
जबें मगध में आवै छै
तबें एकरों लहर के चंचलता
आरो बढ़ी जाय छै
चंद्रगुप्त मौर्य के
शूरता कें याद करी
भिक्क्षु सम्राट अशोक कें याद करी
महात्मा बुद्ध रों स्मृति सें—
तबें यहा गँगा रों लहर
साहित्य रों वाणी बनी जाय छै।
मगध रों गंगा में
अश्वघोष
महाकवि भास

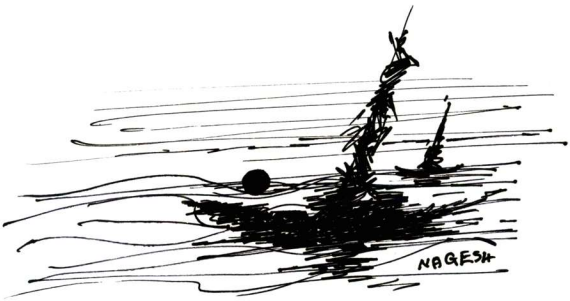

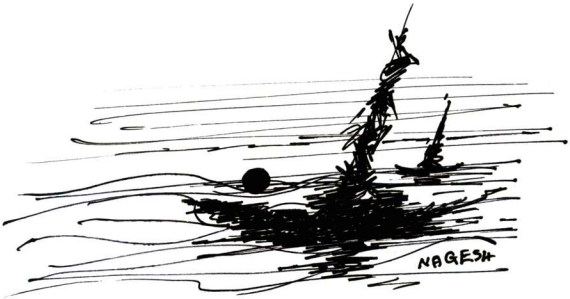

वाणभट्ट आरो चाणक्य रों वाणी
सुततें-जागतें रहै छै।

यहीं आवी कें गाँग
अपनों देह कें फैलावें लगै छै
सोन नदी कें गल्ला लगाय कें
आगू बढ़ी जाय छै
अंग प्रदेश रों पवित्र भूमि दिस।
माय गाँग
तोरा अंग देश एत्तें प्रिय कैन्हें छौं
ई हमरा मालूम छै
हमरै कैन्हें
सौंसे भारते के मालूम छै
कि
अंग देश
अंग महाजनपद
अंग प्रदेश
तोरों नैहरों छेकौं
यहीं तोरों
दोसरों जन्म होलों छेल्हौं
जबें अंग रों रिखि जह्नु नें

अँजुरी में राखी
तोरा उदर में रखी लेलें छेल्हौं
तबें भगीरथ के याचना पर
हुनी अपनों जाँघ सें तोरा
बाहर निकाली देलें रहौं
यहें कारण तोरों नामो तभिये सें
जाह्नवीयो होय गेलौं।

हे माय जाह्नवी
अंग प्रदेश में एक्के दाफी नै
दुए दाफी नै
तीन-तीन दाफी उत्तरवाहिनी बनै छों।

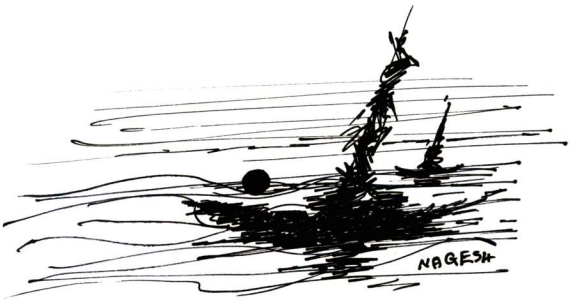

प्राणधारा गाँग

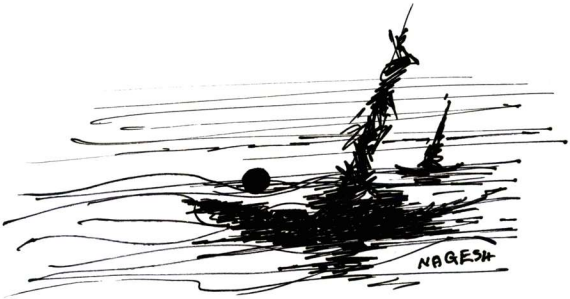

के छेलै
सौंसे जंबू द्वीप में
देवदत्ता सें बढ़ी कें अपरूप रूपजीवा?
उर्वशी, रंभाओ ईर्ष्या करै
देवदत्ता रों रूप सें
वही देवदत्ता
कभियो पाटलिपुत्र के
गाँग के काता पर
गंगा रों लहर पर
अपनों छवि के निहारते रहै
घंटो-घंटो बैठी कें।

देवदत्ताहै कैन्हें
कोशा
आरो ओकरों बेटी उपकोशाहौ
जे अपनों अपूर्व खूबसूरती
अपूर्व यौवन
अपूर्व धन-संपत्ति लेली
सौंसे जंबू द्वीप में
विख्यात रहै।

तोरों काता पर
जबें विहार करतें होतै
तबें सौंसे पाटलिपुत्रहै
पुष्पपुर बनी जैतै होतै।

कोशा
जेकरों बारे में ई कथा
जगतप्रसिद्ध छै कि
जबें
सिंहगुहावासी रों मुनि
ओकरों लुग पहुँचलों छेलै
ई बतावै लें कि
अप्सरा
सुन्दरी सिनी के रूप रों जादू
विरागी कें की बाँधे पारें!
मतर हौ तपस्वी कें
है कहाँ मालूम छेलै
कि कोशा
धरती रों उर्वशी छेकै
बस कोशा कें
देखै भर के देर छेलै

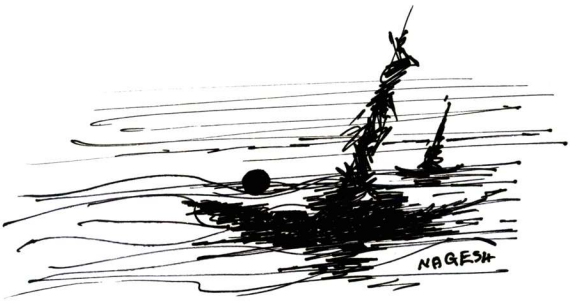

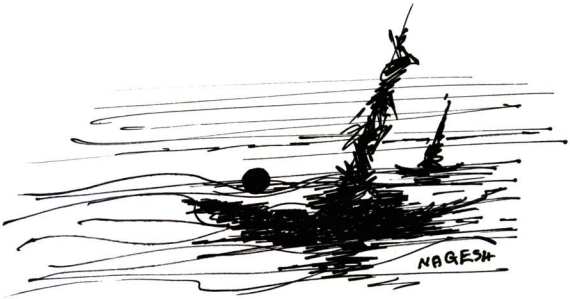

आरो
सिंहगुहावासी
कोशा के रूप
जाल में फँसी कें
ओकरों दासे तें बनी गेलों छेलै।

माय गाँग
हे माय गाँग
हम्में तोरों लहरे सें
सुनलें छियै
पायल-कंगनाहै के नै
तलवार के झनकारो तांय
जे तोरों लहर में गूँजै छै।

हे माय गाँग
तोरों रेतों सें
तोरों लहर सें
तोरा छूवी कें ऐतें
वेगवती हवा सें
तोरों जंगल सें
हम्में एगो कथा सुनलें छियै

कहानी गुरु गोविन्द सिंह रों
जे पाटलिपुत्र में
प्रकट होलों छेलै,
जेना तोहें
स्वर्ग कें छोड़ी
अनचोके धरती पर
प्रकट होय गेलों छेलौ
धरती रों पूतसिनी के दुःख
हरै लेली
छिनमान होन्हे
तोरों फैल्लो आँचल के
एक पवित्र कोरी पर
प्रकट होलों छेलै
गुरु गोविन्द सिंह।

हिन्दु धर्म के रक्षा लेली
जिन्हीं अपनों चार-चार पूत
तेजी देलकै
मतर अपनों संकल्प सें
पीछू नै हटलै
देश रों पूरब-पच्छिम

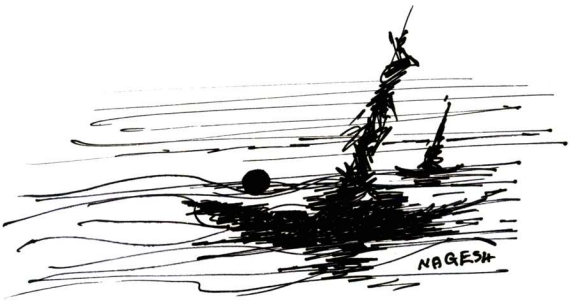

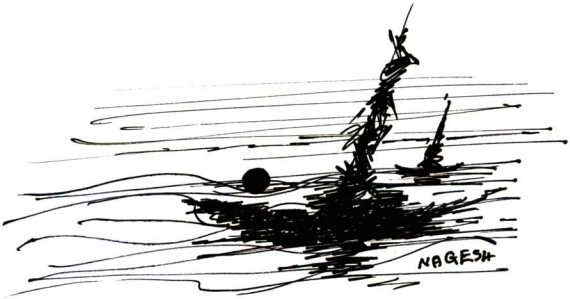

दक्खिन-उत्तर तांय गेलै
धर्म के रक्षा लेली
महाजनपद मगध सें लैके
महाजनपद अंगप्रदेश तांय।

हे माय गाँग
तोरों लहर
गुरु गोविन्द सिंह रों यशोगाथा
तेज-तेज सुरों में
गैतें बहतें रहै छै
अंग प्रदेश रों मणिहारी काता तांय।

हे पतितपावनी
तोरों महिमा रों गाथा
मगध सें लैकें अंग तांय
ओत्तै विराट छौं
जत्तें कि अंग प्रदेश में
तोरों काता रों विस्तार।

तोहें कै-कै नद्दी कें समेटतें
मोकामा तांय की पहुँचै छों

तोरा में अंग प्रदेश रों महिमा
दूध-पानी नाँखी
एक हुवें लगै छै।

मोकामा
यानी मगध-अंग रों
मिलन-स्थल
यानी मगध-अंग रों सीमा-रेखा
मोकामा रों सम्मुख
गंगा रों बायाँ भाग में
अंग प्रदेश रों सिमरिया घाट
जहाँ कातिक महीना में
महान धार्मिक मेला लगै छै
सिमरिया रों ई कातिक मेला
अंग प्रदेश रों कुंभ मेलाहे तें छिकै।

यही सिमरिया गाँव में
ओज रों कवि दिनकर के
जन्म होलों छेलै
जिन्हीं तोरों धाराहे नाँखी
अपनों कविता कें

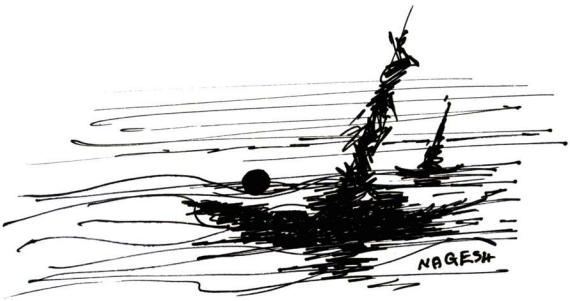

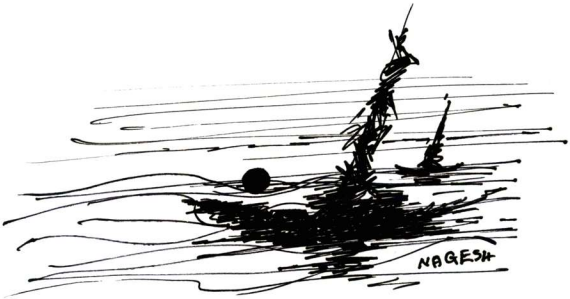

आग आरो चंदन सें सजैलें छेलै
लगै छै—
हे गाँग माय
तोहीं दिनकर जी के कविता में
समाय गेलों छों।

मगध आरो अंग के
भूमि के
हरियाली सें भरैवाली हे माय गाँग
तोहें मोकामा सें आगू की बढ़ै छों
तोरा में कै-कै नद्दी के
अपना में समेटते
आखिर क्यूलो नदी
तोरा में समाय जाय छै।

कभियो हेनों समय छेलै
जबें कैएक नद्दी रों पानी
मोकामा के झील में
इकट्ठा हुऐ
आरो वहीं सें एक बड़की नदी बनी
गंगा में समाय जाय

जे मगध-अंग रों सीमा कें
अलग करै
जहाँ मगधराज बिम्बसार
के समय में
मगध-अंग रों सेना बीच
भीषण युद्ध होलों छेलै
आरो पराजय के कारणे
अंग राज्य के आखरी राजां
महानदी में कूदी
जाने दै देलें छेलै—
यहू कथा
तोरों लहर पर
अभियो तांय दर्ज छै।

हे माय गाँग
तोरा सब्भे कुछ याद होथौं
तोहें यहू नै भूलें पारलें होभौ
कि पालवंश रों आखरी राजा
इन्द्रद्युम्न रों पटरानी
अपनों पुष्करणी के बीच
स्वर्ण कमलों पर नहाय छेलै

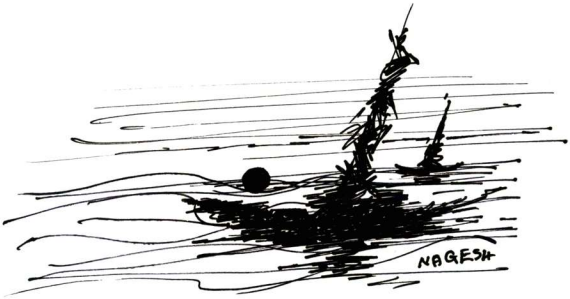

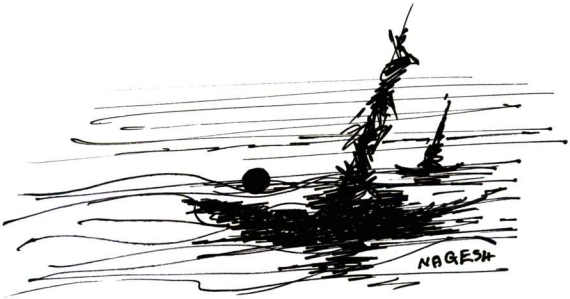

आरो एक दिन हेनो होलै कि
नहाहिये वक्ती
स्थिर रहै वाला
स्वर्ण कमल रों पंखुड़ी सिनी हिलें लगलै
असगुन होय के शंका भेलै
आरो सचमुचे में शंका सच होलै
इन्द्रद्युम्न पटरानी साथें
अपनों राजे छोड़ी देलकै
यहू कथा
क्यूल नदी के जलधारा के साथे साथ
तोरों लहर में
समैतें रहै छै
तब तांय
जब तांय कि क्यूलो नदी
चलते-चलते
थकलों-हारलों
सूर्यगढ़ा आवी कें
तोरा में समाय नै जाय छै।

गाँग
ई नाम लेथैं

सौंसे देह
श्वेत शिलाखंड नाँखी चमकी उठै छै
आरो रोम-रोम
तुलसी मंजरी नाँखी
सुगंधित होय उठै छै
एक अजीब पवित्रता लेलें।

मोंन
आरती पर रखलों
अकंपित दीया रँ
रौशनी दिएँ लगै छै
कामना रों अन्हार
नै जानौं कहाँ
कबें छोड़ी दै छै काया
आरो शेष बची जाय छै
कपूर के सुगंध सें सनलों
कोय अलौकिक प्रकाश।

गाँग
धरती पर बहतें अमृत छेकै
आदमी रों मुक्ति छेकै

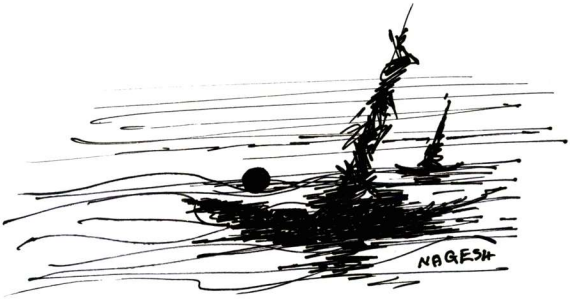

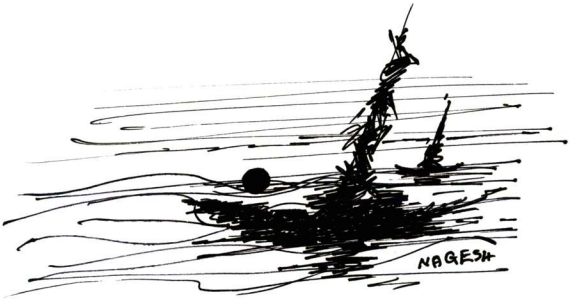

स्वर्ग रों दीप्ति छेकै
भारत रों रूप छेकै
जाड़ा रों धूप छेकै
भारतवासी रों माय छेकै।
गंगा रों अर्थ
कोय व्याकरण में नै
कोय शब्दकोश में नै
ऊ जे वहाँ अर्थ छै
ऊ कोय नदी रों छेकै
माय गाँग रों नै।

गाँग तें
समाधि में
जागैवाली शक्ति छेकै
रिखि के दिव्य शक्ति छेकै—
ई हम्मी नै
अंगप्रदेश रों रोम-रोम बोलै छै।

धन्य छै ई अंग भूमि
जहाँ गाँग
एक दाफी नै

दू दाफी नै
तीन-तीन दाफी
उत्तरवाहिनी होय के बहै छै।

हे माय गाँग
पहलें तें तोहें
सूर्यगढ़ा में ढुकथैं
उत्तरवाहिनी होय छौ
आरो मुंगेर तांय
उत्तरवाहिनीये बनलों रहै छों
फेनु अजगैबीधाम में आवी
कुच्छु दूर वास्तें
आरो फेनु
कहलगाँव सें कोशी संगम तांय
उत्तरवाहिनीये बनलों रहै छों।

धन्य छै
ई अंग भूमि
कत्तें सौभाग्य
बाँटी रहलों छौ तोहें यहाँ
ई बात खाली हम्मी नै

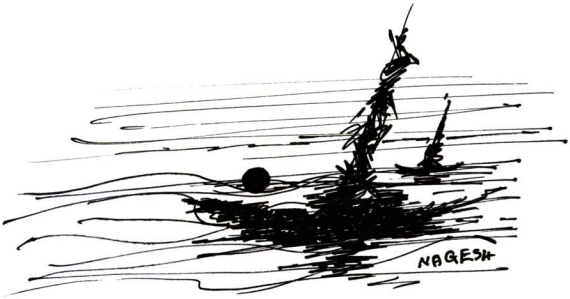

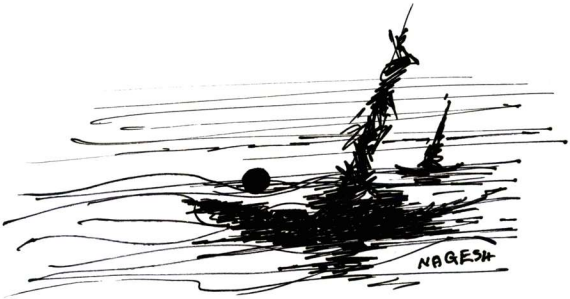

सब्भे अंगवासीये नै
तोरा में अपनों धारा समाय कें
डकरा नालाहौ बोली रहलों छै।

हे पतितपावनी
आखिर तोहें
मुद्दल रिखि रों धाम तांय
ऐतें-ऐतें
एत्तें हँसमुख कैन्हें होय उठै छों
कोन ठो याद
तोरा एत्तें गुदगुदावें लागै छौं?
यही लें कि
यहाँ मुंगेर के
बीचोबीच बहै छों
आकि
तोरा याद आवी जाय छौं
जबें मुंगेर
चंपकतीर्थ कहैलों जाय छेलै
आकि ई याद करी कि
पुरानों समय में तोरों ऊ पार सें
एकटा घन्नो जंगल शुरू होय छेलै

जे नेपाल रों सीमा तांय जाय छेलै
आरो जहाँ तांय
ई जंगल जाय छेलै
वहाँ तांय
अंग महाजनपद रों सीमा छेलै
जेकरै पुरानों समय में
चम्पकारण्य भी लोगें बोलै छेलै।

हे मोक्षदायिनी
तोहें कष्टहरणी तांय पहुँची कें
आखिर की
देर-देर तांय सोचतें रहै छौ
की वनवास के क्रम में
आगू पीछू चलतें राम, लखन, सीता कें
याद करतें रहै छौ
आकि पालवंश रों वैभवे कें याद करै छौ
जेकरों याद दिलावै छै
तोरों काता में बनलों
मुंगेर रों अद्भुत गुप्त गढ़
जेकरों दीवारी में
कोठरी सिनी में

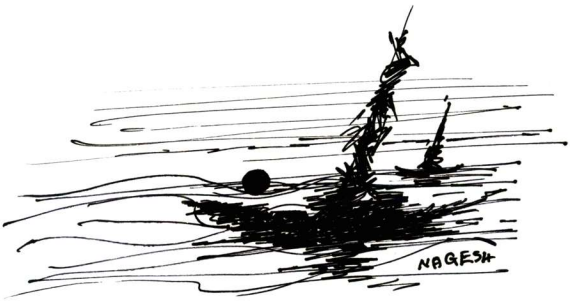

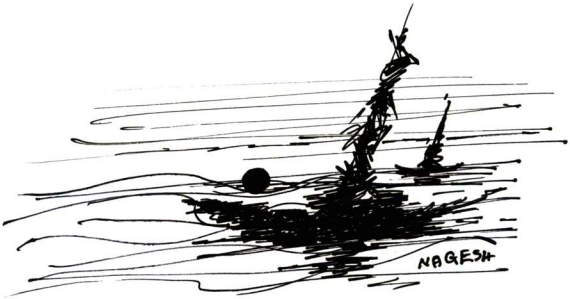

जाने कत्तें तें युगों रों कहानी सिनी
हँसतें-खेलतें
आरो कपसतें मिलै छै।
तोरों काता में ठाढ़ों
ई गुप्त गढ़
अपनों अतीत के बारे में
तोरा सें बोलतें रहै छै।

माय
हम्में तोरों
कष्टहरणी घाटे पर बैठी कें
सुनलें छियै
हौ तांत्रिक रों कहानी
जे अपना कें
खौलतें घी के कढ़ाय में
फेकी दै छेलै
आरो यै किसिम सें
भगवती कें खुश करी
सवा मोंन सोना
हासिल करी लै!

आखिर की करै छेलै
एत्तें-एत्तें सोना
कोन दुखिया रों बीच
बाँटी आवै सोना—
कोय नै जानै
मतुर एत्तें तें
सब्भैं जानै छै कि
तोरों काता में ठाढ़ों
यही गुप्त गढ़ पर
कभियो राजा धर्मपाल रों पुत्र
देवपाल रों धजा
लहरावै छेलै
जौनें अपनों विजयोत्सव पर
तोरों एक काता सें
दोसरों काता तांय
नौका सिनी रों सेतु बनवाय देलें रहै,
तबें तोरों लहर
नाव पर लहरैतें
रौशनी सें
सोना रों उठतें तरंग बनी गेलों छेलै!

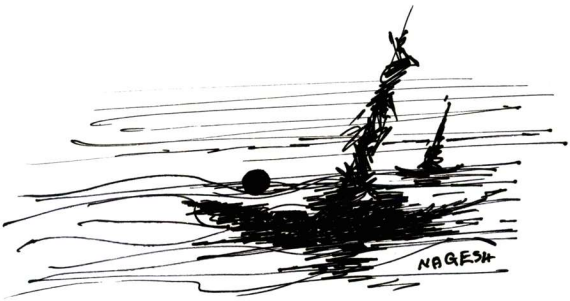

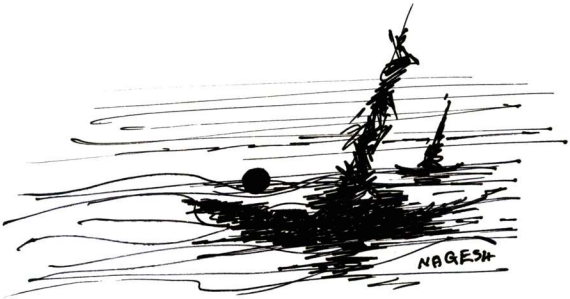

माय गाँग
तोहें पालवंश के
गौरवे के की नै देखलें छौ
देखलें छौ तोहें
शेरशाह के बढ़तें पराक्रमों कें
सुनतें रहलों छौ
मीरकासिम के कहानियो के
तोरा सें बेसी
आरो के जानै छै?
तोरों काता में बनलों
मुंगेर रों ई गढ़
कत्तें-कत्तें इतिहास कें
तोरा सें कहतें रहै छौं
मुगल शासकों रों कहानी—
नारा आरो हुँकार रों कथा।

आरो ई कहानी सिनी कें
समेटते हुएँ
गुनगुनैतें होलें
चल्लों आवै छै तोरों लहर
अंगप्रदेश रों गंगाधाम में

जहाँ तोहें
एक दाफी फेनु
उत्तरवाहिनी बनी जाय छों
तोरों यहा गति रों कारणें
गंगाधाम
कलशतीर्थ के नामों सें
लोगों में जानलों जाय छै।

माय गाँग
तोहें यहाँ आवी कें
कत्तें हँसमुखिया
कत्तें शांत
कत्तें गंभीर
कत्तें भव्य
कत्तें विराट
दिखै छौ—
शायत यही लें कि
ई गंगाधाम
शिव रों तपोभूमि रहलों छै
यहीं पर महर्षि अगस्त्य के
तपस्या सें

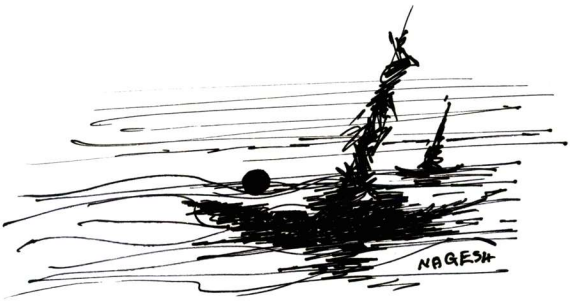

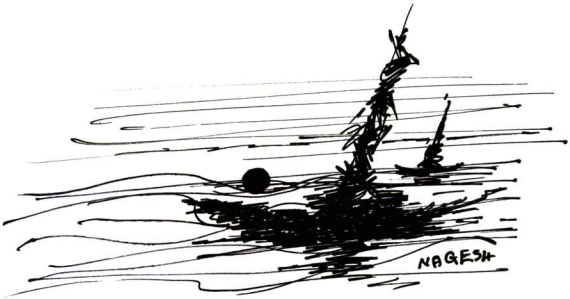

प्रसन्न होय कें
हुनका दर्शन देलें छेलै
कि यहीं
सोम नें
शिव जी रों घोर तपस्या करी
शिव कें
प्रसन्न करी लेलें छेलै
आरो वहा प्रसन्नता में
महादेव शिवें
सोम कें
अपनों सिर पर
रखी लेलें छेलै—
ई गंगाधाम
तभिये सें
काशी नाँखी
पवित्र होय रहलों छै।

माय गाँग
कभियो-कभियो हम्में सोचै छियै कि
आखिर
एकरों नाम गंगाधान कैन्हें पड़लै?

शायत यही लें कि
तोरों दोसरों जन्म
यही भूमि पर होलों छेल्हौं
गिरि पर तपस्यारत
जह्नु रिखि के आश्रम
जबें तोरों धार में
बहें लगलों छेलै
तखनी रिखि नें
तोरा चुरू में लैकें
पीवी लेलें छेल्हौं
ई देखी
बेकल भगीरथें
कत्तें अनुनय करलें छेलै
तभिये तोरा जह्नु रिखि नें
मुक्त करलें छेल्हौं
तहियें ते तोहें
जाह्नवी कहलैला—
यानी जह्नु रिखि रों पुत्री!

माय गाँग
ई गंगाधाम

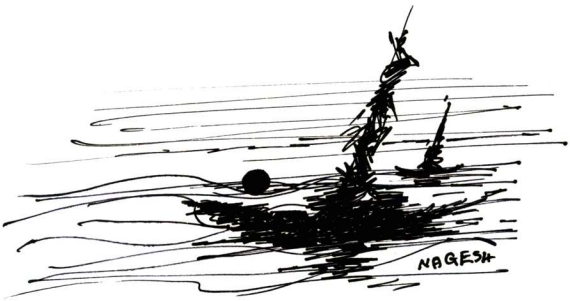

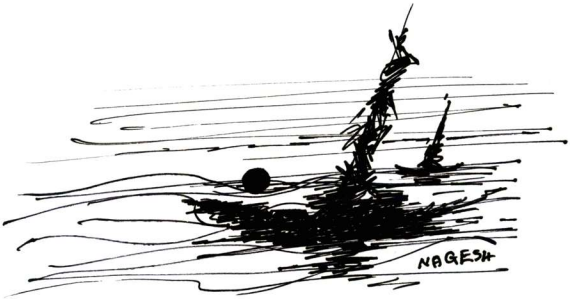

तोरों नैहर छेकौं
तोरों दोसरों जन्म के भूमि
तभिये तें ई गंगाधाम छेकै।

की कारण छेकै कि
जबें तोहें
यैठां सें निकलै छौ
तोरों चेहरा पर
कभियो कोय
उदासी नै दिखै
तोहें कोय विराट महाकाव्य नाँखी
महाभारत नाँखी
रामचरित मानस नाँखी
हमेशे बहतें रहै छों
चंपा सें लैकें
गंगा सागर तांय।

सिमरिया सें लै कें
राजमहल रों विशाल क्षेत्र
तोरो मायके ही तें छेकौं।
हे गाँग माय

यहाँ तोरों हँसी
तोरों उल्लास
देखथैं बनै छै।

माय गाँग
तोहें अंग देश के
अंग महाजनपद के
अंग प्रदेश के
एत्तें कुछ देलें छौ कि
सौंसे सरंग कें
सौंसे धरती कें
जों कागज बनाय देलों जाय
आरो सातो समन्दर कें स्याही
तभियो
अंग प्रदेश में फैललों
तोरों महिमा कें
नै लिखलों जावें पारें!

हे माय गाँग
तोहीं तें
अंगवासी कें

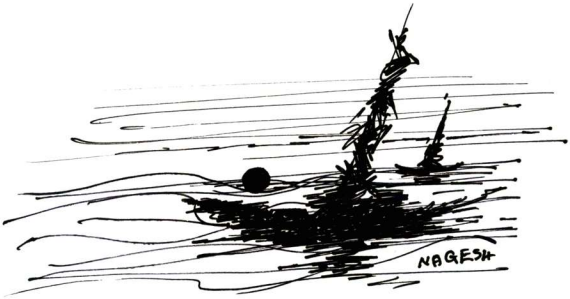

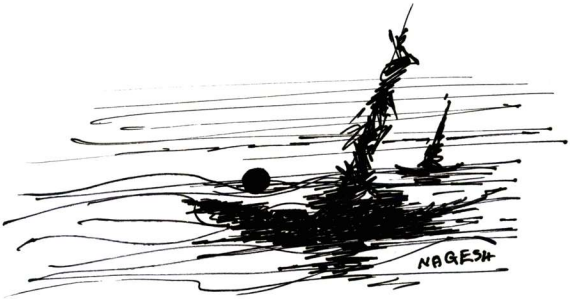

ऊ विशाल जलमार्ग देलें छेलौ
जेकरै पर चली कें
अंगवासी
बहुत दूर देशों तांय गेलै
आरो बसैलकै
वहाँ एक लब्बों अंग देश–
'अंगकोर'
वहाँ-वहाँ बसी गेलै चंपा
ताकि
चंपा रों कहानी कें
दूर-दूर देशो में फैलैलों जावें पारें।

अंग प्रदेश रों चंपा में
तोरों
ओत्तै कहानी
लहरावै छै
जत्तें कहानी
अंग प्रदेश में
तोरों लहर पर बिछलों होलों छै।

कभियो गंगाधामे में

तोरों घाटो कें पार करी
भगवान बुद्ध
अंगुत्तराप पहुँचलों छेलै
कै दाफी तें ऐलों छेलै
भगवान बुद्ध
चंपा में—
जोंन चंपा में
गंगाधाम रों बाद
तहूँ तें उतरै छौ, माय
अपनों सौंसे आभा कें
बिखेरतें होलें!
कहै छों कथा
सोणदंड रों
चंपा रों अद्वितीय वेदाभ्यासी
जे अपनों शिष्य सिनी के साथ
बुद्ध रों वाणी सें
अभिभूत होय कें
बौद्ध होय गेलों छेलै।
कहै छों कथा
वासुपूज्य रों
हुनकों जन्म सें लै कें

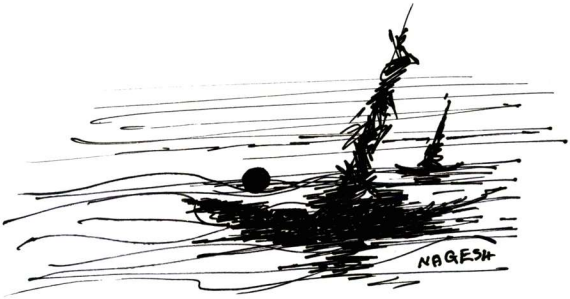

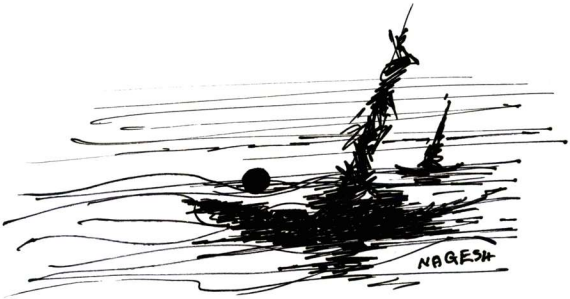

निर्वाण तांय रों कथा...
कहै छों कथा
सम्राट अशोक रों माय
शुभद्रांगी के
जे चंपाहे रों बेटी छेली
कहै छों कथा
विशाखा रों
जे भगवान बुद्ध रों
पहली शिष्या छेली।

हे गाँग माय
चंपाहै में आवी कें
तोहें विस्तार सें कहै छौ
चंदनवाला रों कथा
जे भगवान महावीर रों
पहलों शिष्या छेली
आरो फेनु कहै छौ
महासती बिहुला रों कथा
जें अपनो पतिये के नै
जीवन लै आनलें रहै
बलुक ई सिद्धो करलें छेलै

कि जनानी चाहे तें
सब्भे संकटों के
मुकाबला करी
अपनों अस्तित्व कें
रक्षा करें पारें।

तोरों एक-एक लहर
कहै छै कथा
महासती बिहुला रों
विषहरी रों जिद के
चाँदो सौदागर के भक्ति के
ओकरों समृद्धि के।

माय गाँग
तोरे तें पुण्य कें पावी
कभियो यही चंपा
बड़ों-बड़ों जहाजों के
शरणस्थली बनलों रहलै
वही सिनी जहाज सें
उतरै छेलै
सोना, मोती, माणिक–

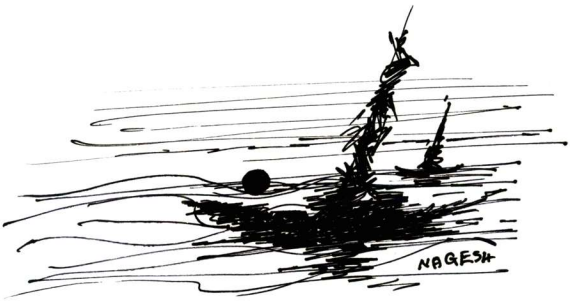

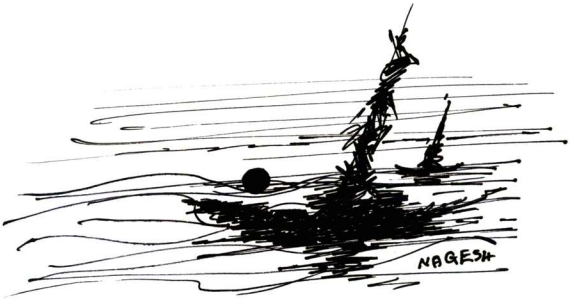

चमकै छेलै चंपा
सूरजों रों आभा नाँखी
एकेक सौदागरों रों
द्वार पर
खड़ा रहै सौ-सौ बैलगाड़ी
सोना के मोहर सें भरलों।

धने नै बरसै छेलै
संस्कृतियो बरसै छेलै
संगीतो बरसै छेलै
चंपा रों वासवदत्ता रों कहानी
राग-रागनी नाँखी
अंग प्रदेश रों घरे-घर में
अभियो घुमतें-फिरतें रहै छै।

दुनियाँ
सब्भे बात जानै-न-जानै
राजा रोमपाद रों कथा तें
जानवे करै छै
हुनके तें दामाद छेलात महर्षि ऋषिश्रृंग
अवध के महाराज दशरथ लेली

करनें छेलात यज्ञ
आरो अवध नरेश दशरथ रों ऐंगनों में
गूँजलों छेलै किलकारी
राम रों
लखन रों
शत्रुघ्न रों
भरत रों।

ऋषिश्रृंग
तोरे तें लहरों पर
चढ़ी कें ऐलों छेलै
चंपा में
जिनकों पिता विभांडक
अंगे देश रों ऋषि छेलात
आरो तोरे ही तटों पर
जिनकों आश्रमो रहै।
चंपा में आवी कें
कत्तें-कत्तें कहानी कहै छौ
हे माय गाँग
आरो आखिरी में सुनावै छों
महादानी

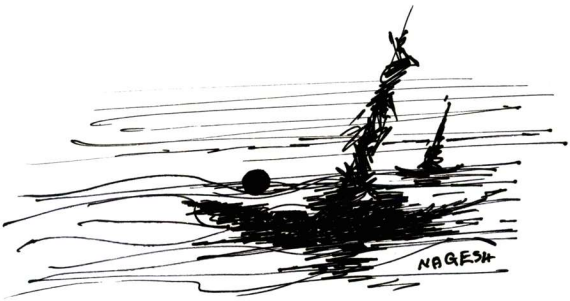

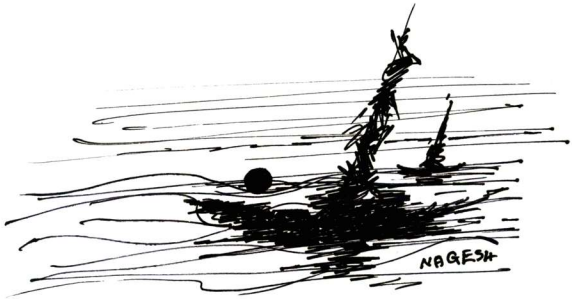

परमवीर
कर्ण रों कथा
महाभारत रों सूर्यपुत्र के कथा
जे तोरे लहरों में धसी
सूर्योपासना में लीन रहें छेलै
सवा मोंन सोना दानो करै
तोरों तटों पर ठाढ़ों होय कें
अइयो
तोरों तटों पर ठाढ़ों
कर्णगढ़
एकेक कहानी कें कहै छै।

अतीत औघड़ नाँखी
जगतें रहै छै
चंपा रों गंगा के किनारी-किनारी।

हे माय गाँग
तोरों चंपा में
शौर्य आरो दाने के कथा
नै दौड़ै छै
यहाँ तोरों काता-काता पर

वैराग्यों रों
कत्तें-कत्तें कथा
छितरैलों होलों छै
हीरा-मणि के पत्थल नाँखी।
तोरों काता-काता में
बिखरलों होलों छौं
होन्हे प्रेम रों गाथाओ
तोरों नगीच ऐथैं
अभया रों कथा
जगें लगै छै
जे रानी तें छेलै
कोय नरेश दधिवाहन रों
मतुर जेकरा
प्रेम होय गेलों छेलै
चम्पाहै रों
एकठो सेठ महासुदर्शन सें
राजा के खबर मिललै
आदेश होलै
सुदर्शन के सिर
ओकरों धड़ सें
अलग करी देलों जाय

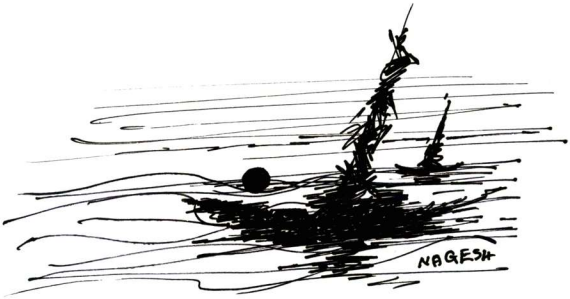

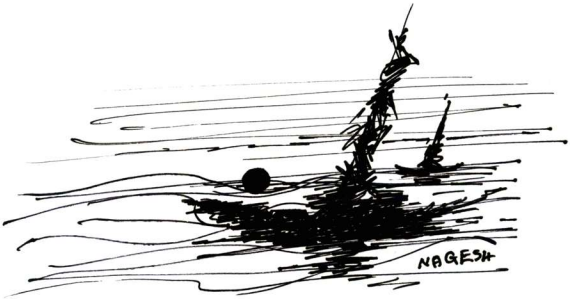

आरो जबें जल्लाद
हेनों करै लें ऐलै
तें ओकरों तलवार
फूल के माला में बदली गेलै
सुदर्शन रों प्रेम बची गेलै।

चंपा केरी हे गाँग
हम्में तोराहै सें सुनलें छियै
बारी-बारी
बिहुला
विशाखा
चंदनवाला
सुभद्रांगी
अभया
आरो रानी घग्घरा रों कहानी।

ई तें सब्भैं जानै छै
कि तोरो किनारा पर बसैवाला
सेठ-द्वारपाल लुग
अठारह करोड़ स्वर्णमुद्रा
आरो दस करोड़ गाय छेलै।

शायत केकरूहौ विश्वास नै होतै
हुवै केना सकै छै?
मतर हेन्हे छेलौं तोरों चंपा।

तोहें अपनों
सबटा प्रेम दै रखलें छेलौ एकरा
तभिये तें
अपार धन-संपत्ति रों साथ
तोरों किनारा पर
ज्ञान रों महासरस्वती बहै छेलै।

कहलगाँव
विक्रमशिला बौद्धमहाविहार रों खंडहर
अइयो
अतीत रों ज्ञान के परंपरा कें
खुल्लों कंठ सें बोली रहलों छै
कि तोरों काता-काता में
दीपंकर श्रीज्ञान
सरहपाद
शबरपा
चंपपा

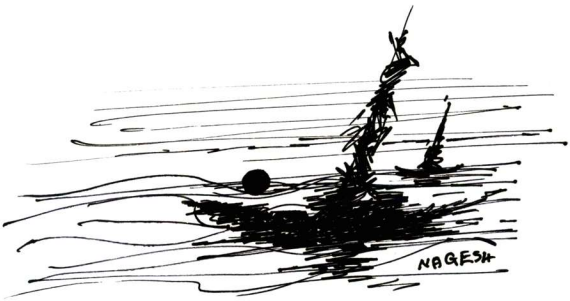

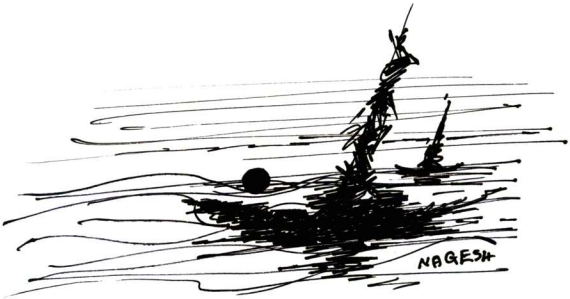

चेलूकपा
रों वाणी गूँजलों छेलै
जेना कि
कुप्पा घाट रों किनारी-किनारी पर
महर्षि मेंही रों वाणी
तोरों रेत आरो लहर पर
सातो सुर में बजतें रहै छै।

हे गाँग माय
सच्चे में
अति पुनीत छै ई अंग प्रदेश
जहाँ पवित्र मोक्षदायिनी
महानदी गाँग में
महानदी कोशी
मिलै छै
आरो तखनी समुन्दरे नाँखी
फैली जाय छों तोहें
कहलगाँव में
फेनु तें फैलतें जाय छों
अंग प्रदेश रों
आखरी छोर तांय

राजमहल के कहानी सुनावै लें
जे भारतेन्दुओ रों जन्मभूमि छेकै
बिहार-बंगाल रों किस्मत के कहानी
बादशाह रों भाग्य-दुर्भाग्य छेकै।

मतर ई सब बातों सें बेसी
तोहें ई कहानियो कें
दुहरावै छों कि
केना कें
तोरों किनारा पर
शची ने घोर तपस्या करलें रहै
आरो आखिर में
स्वामी रूपों में पैलें छेलै
देवता रों राजा इन्द्र कें।

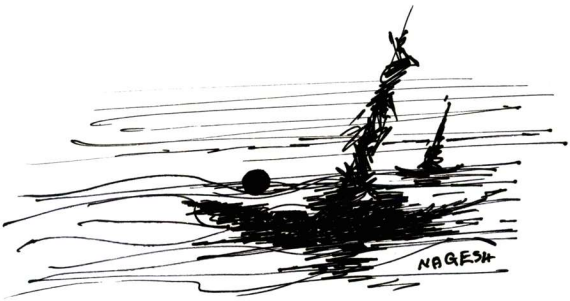

मिलन कथा

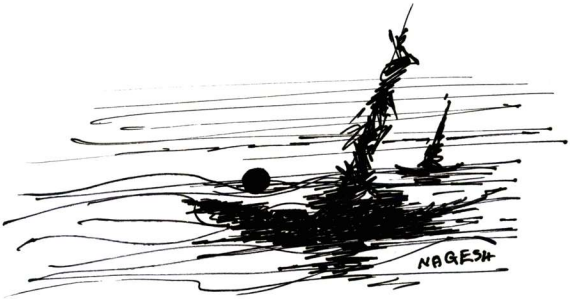

हे माय गाँग
अंग प्रदेश सें निकलथैं
तोरों धारा
दू भागों में
बंटी जाय छौं
जेना तोहें
अपनों दू बाहू कें
आगू फैलाय देलें रहौ
केकरा सें गल्लों मिलै लें
केकरा सें गल्लों लिपटी
अपनों सबटा खुशी
अपनों सबटा दुःख
सौंपी दै लें।

हों, पच्छिम बंगाल रों मुर्शिदाबाद
मुर्शिदाबाद के
नदिया गाँव
यही तें ऊ जग्घो छेकै
जैठां सें तोहें बटी जाय छों
दू भागों में
आरो जगत में

प्रसिद्ध होय जाय छों
केकरो लें पद्मा
केकरो लें भागीरथी
मतर की अंतर पड़ै छै
कोय कोइयो नामों सें तोरा पुकारें
तोहें छों तें सब्भे लें
पतितपावनी गंगाहे
मोक्षदायिनी गंगाहे
पापविनाशिनी गंगाहे
जगततारिणी गंगाहे–
चाहें तोरों धार
बंगलादेश रों भूमिये के
कैन्हे नी पवित्र करें
आकि फेनु बंगाल रों चैतन्यभूमिये कें।

की फर्क पड़ै छै
कि हुगली तांय ऐतें-ऐतें
तोहें हुगली नद्दिये
बनी जाय छों
मतर तोरों धारा में
लहर में

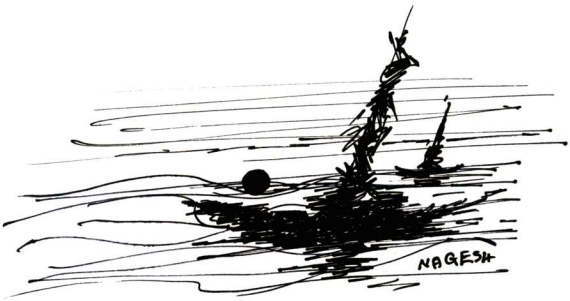

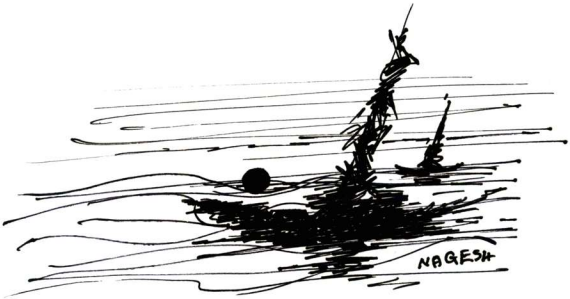

जोंन भगीरथ रों कथा
लिखलों होलों छै
हौ शेषे कहाँ होय छै!
तोहें आखिर तांय
भागीरथिये बनली रहै छों।
ई कहानी
आयको तें नै छेकै
आय सें तीन-चार करोड़ सालों सें
पहिलकों कथा छेकै
जबें हिमालय नें
अपनों आकार लेलें छेलै
आरो तोहें उतरी गेली छेला
हौ हिमालय सें ही
भारत रों पुण्य भूमि पर
आरो तभिये सें
बहले जाय रहली छों
बिना रुकले
अविरल गति सें।

हे माय भागीरथी
हावड़ा होतें हुएँ

जबें तोंय
सुंदरवन में
विश्राम लै लें पहुँचै छों
तबें महासागर
कत्तें स्नेह सें
तोरों दिस देखतें रहै छौं।

सुंदरवन तांय ऐतें-ऐतें
कत्तें-कत्तें वनस्पति
खुशी सें
पुलकित होतें रहै छै
तोरों विजय रों कथा
वही सुंदरवन में
गरजी-गरजी कें कहै छै
शक्ति रों अनगिनती सूर्य नाँखी शेर।
कभियो यही शेर
राजमहल के वनों में
दहाड़ै छेलै
जबें सागर
बंगाल रों सुंदरवन के नगीच नै
राजमहल के नगीचे होय छेलै

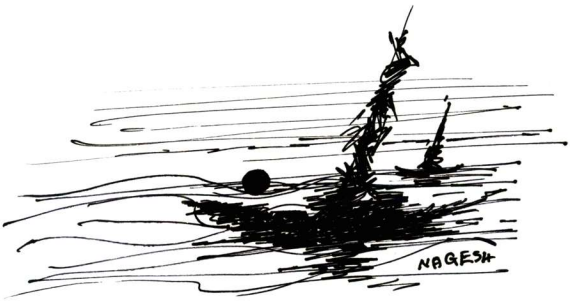

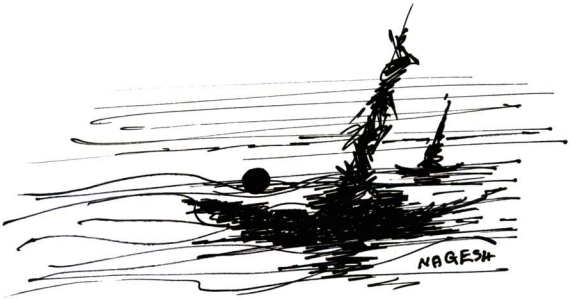

आरो अंग देश रों मंदार
सागर के बीचों में
शिवलिंगे नाँखी
शोभै छेलै।

सदी-पर-सदी बितलों गेलै
काल बितलै
माय गाँग
तोरों साथ ऐलों
पर्वत रों रेत
नदी रों मिट्टी
जमतें गेलै
आरो समुद्र एक दिन
सुंदरवन तांय पहुँची गेलै
जहाँ अभियो
मिट्टी जमी रहलों छै
आरो समुन्दर
दूर होते जाय रहलों छै
डेल्टा के उपरैतें भूमि के
कारणें
तोरों धार

वैठां कत्तें मंद पड़ी जाय छै
की
यहाँ तांय ऐतें-ऐतें
सचमुचे
थकी जाय छौ तांय
मतुर सागर सें
मिलै रों चाह कें
कहाँ रोकें पारै छै
डेल्टा रों उठतें भूमि!
तोहें अपना कें
ई धारा में नै
कै-कै धारा में
बदली लै छौ
यहाँ
तोरा
एत्तें-एत्तें धारा में
विभाजित देखी कें
हमरा यही लगै छै कि
हौ सब्भे नदी
महानदी सब–
यमुना

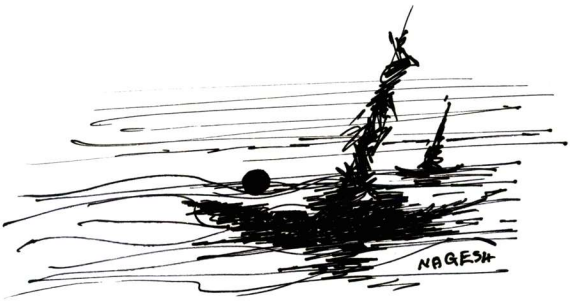

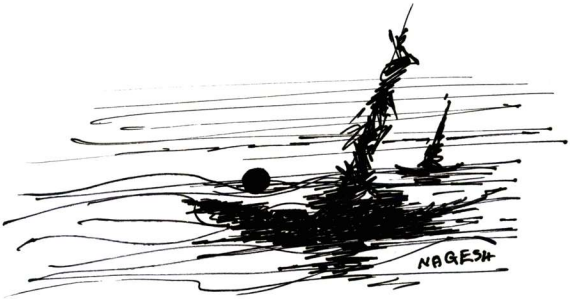

रामगंगा
करजली
सोम
गंडक
कोशी
बाँसलोई
मयूराक्षी
चानन
जे सब तोरा में मिली कें
एक होय गेलों छेलै
यहाँ तांय ऐतें-ऐतें
तोरा सें अलग होय रहलों रहें
शायत ई बतावै लेली
गाँग रों शक्तिये पावी कें
हम्में सागर रों
किनारी तक पहुँचें पारलें छी
नै तें, नै जानौं
कहाँ
कोंन पहाड़ों नें
कोंन रेगिस्तान नें
कोंन जंगल नें

हमरा सोखी लेलें होतियै।

हे गांग माय
एत्तें-एत्तें धारा रों साथ
तोहें यहाँ
हेने लगै छोंं
जेना देवी भगवती रों
कै-कै हाथ
एक्के साथ
हवा सें लहराय उठलों रहें।

हे माय गाँग
तोहें भगवती ही तें छेकी
तोहें खाली
धरती पर
स्वर्ग रों महानद्दिये
नै छेकी—
तोहें जीवनदायिनी छेकी
तोरे कारण तें
नगर-महानगर रों
सीना पर

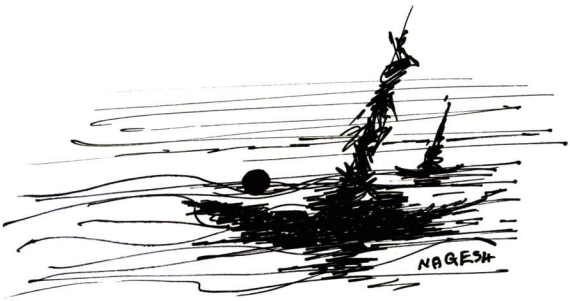

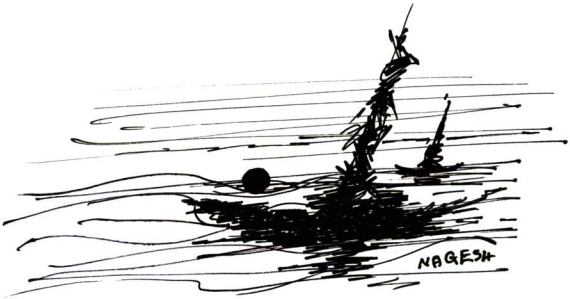

कंधा पर
बाँही पर
हथेली पर
सजलों होलों छै तीर्थप्रदेश
महापर्व रों उत्सव।

मतर आयकल देखै छियै कुछ आरो
की कारण छेकै कि
तोरों चेहरा पर
बरखा रों पनसोखा नै
बरखा रों
भय दैवाली
बिजली कड़कतें रहै छै—
कहीं यैलें तें नै
कि तोरों
कंचन काया पर कोय
महुरैलों पानी रों तेजाब
छिड़की रहलों छौं!
वहू कि
एक-दू मोंन नै
लगभग तीन करोड़ लीटर प्रदूषित पानी—

वहू में रोजानाहै।

लोगों कें नै मालूम कि
है अपराध के
जे दंड होतै
वैसें तें कोइयो किसिम
बचना मुश्किल/हम्में रहौं कि तोहें
एक्को मछली के बचना मुश्किल
कोय लब्बों सृष्टि लेली
एकेक करी कें मरी रहलों छै
मछली रों सब्भे प्रजाति
घड़ियाल मरी रहलों छै
डॉलफिनो के प्राण बेकल छै
मतर ई आदमी छेकै कि
चेतने नै छै।
हिमालय पर
बारूद रों ज्वालामुखी
फूटी रहलों छै
बर्फ रों पहाड़ पिघली रहलों छै
कल यहू पारें कि
हिमनद्दियो सूखी जाय

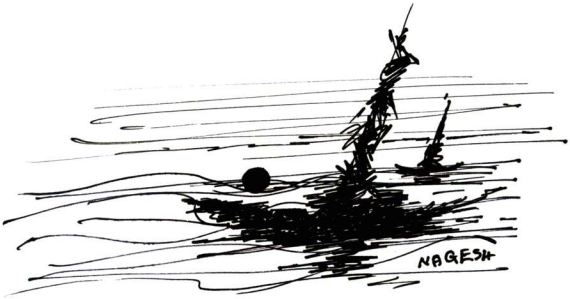

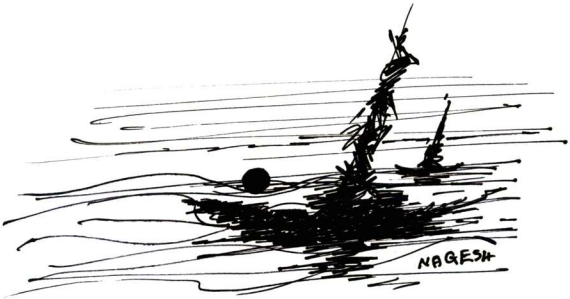

तबें तोहें कहाँ होभौ धरती पर
हे माय गाँग
कहीं हेनों नै होय जाय कि
तोहीं रूठी कें
फेनु लौटी जा स्वर्गलोक
आरो भरत भूमि रों पूत
शोकसंतप्त सगर नाँखी
विलाप करतें दिखें।

नै, हम्में जीवित होलों सगर रों पुत्रसिनी कें
मरै लें नै देवै
जुलाई बीस सौ चौदह रों संकल्प कें
कोय रावण हरै–
हरै लें नै देवै
तोहें भगीरथे के नै
भारतवर्ष रों सवा करोड़ सें ऊपर
भारतवासी रों माय छेकी।

■■

आभा पूर्वे : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि : २३ अक्टूबर १९६४ ई.
जन्म स्थान : भागलपुर
माता का नाम : जीवनलता पूर्वे
पिता का नाम : रूद्रदत्त पूर्वे
शिक्षा : एम.ए.(गोल्ड मेडल), पी-एचडी
प्रकाशन : देश भर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित
संकलनों में रचनाएँ : चम्पा फूलै डारे डार, आधुनिक अंगिका काव्य कोश, हे दशरथ के राम आदि दर्जनाधिक संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित
सम्पादन : 'नया हस्तक्षेप' (अनियमितकालीन पत्रिका) के अलावा १. गीत-गंगा (अंगिका गीत-संग्रह), २. नवगीतकार मधुसूदन साहा, ३. अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद), ४. जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनंत यात्रा (अंग महिला साहित्यकार संसद, भागलपुर), ५. अंगिका लोकगीत, ६. अंगिका लोकसाहित्य : एक अध्ययन (अंगिका संसद, भागलपुर), ७. केकरॉ चाँद केन्हॉ चाँद (अंगिका संसद, भागलपुर), ८. खोई हुई लड़की का खत (अंगिका संसद, भागलपुर), ९. डॉ. अमरेन्द्रः व्यक्तित्त्व

और वागर्थ (कामायनी, भागलपुर), १०. डॉ. अमरेन्द्र : संदर्भ और साहित्य (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशित पुस्तकें : १. अंतहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास), २. गुलबिया (अंगिका उपन्यास), ३. कुँवर विजयमल (हिन्दी उपन्यास), ४. चन्दन जल न जाए (कहानी-संग्रह), ५. शरीष की सुधा (कहानी-संग्रह), ६. जब-जब झरे श्रृंगार (दोहा-संग्रह), ७. गुलमोहर का गाँव (कविता-संग्रह), ८. नागफनी के फूल (गजल-संग्रह), ९. शिशिर की धूप (कविता-संग्रह), १०. नमामि गंगे (कविता-संग्रह), ११. ताँका शतक, १२. मंदोदरी (अंगिका प्रबंध काव्य), १३. अंगिका व्याकरण आरो रचना-कला (सहलेखन), १४. ऋतुरंजन (कविता-संग्रह), १५. कर्ण महाकाव्य का सौन्दर्य-सौष्ठव, १६. आकाशगंगा (हायकू-संग्रह) १७. हे माय गाँग (अंगिका कविता-संग्रह), १८. काव्यशास्त्र (सहलेखन),

सम्पर्क : शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर (बिहार)